Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Research Paper

शारीरिक शिक्षा और गैर-शारीरिक शिक्षा के विद्यार्थियों की मनो-सामाजिक विशेषता में सामाजिक दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन

जयनारायण [1*], डॉ. शिल्पा चक्रबर्ती [2]

[1] पीएच.डी. शारीरिक शिक्षा टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर, राजस्थान, भारत

[2] सहायक प्रोफेसर, शारीरिक शिक्षा टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author: *जयनारायण

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17458311

सारांश

सामाजिक क्षमता मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य के लिए एक सुरक्षात्मक कारक है। यह हमें मजबूत सामाजिक नेटवर्क बनाने और दूसरों के साथ अच्छा सहयोग करने में सहायता प्रदान करता है। जिसमें विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार की समस्याओं के समाधान में सहायता मिलती है। प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्यः शारीरिक शिक्षा और गैर-शारीरिक शिक्षा के विद्यार्थियों की मनो-सामाजिक विशेषता में सामाजिक दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना था। शून्य परिकल्पना के परीक्षण के लिए बीकानेर संभाग के चारों जिलों के 13 संस्थानों के 400 विद्यार्थियों को शामिल किया गया। साामाजिक दक्षता के मापन हेतु लतिका शर्मा एवं पुनिता रानी के उपकरण का प्रयोग किया गया। शोध के निष्कर्ष में पाया कि गैर-शारीरिक शिक्षा और शारीरिक शिक्षा छात्रों की मनो-सामाजिक विशेषता में सामाजिक दक्षता के आयाम-व्यक्तिगत पर्याप्तता, पारस्परिक पर्याप्तता, सम्प्रेषण कौशल और सम्पूर्ण योग के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। निष्कर्ष में कह सकते हैं कि दोनों समूहों (गैर-शारीरिक शिक्षा और शारीरिक शिक्षा छात्रों) की सामाजिक दक्षता में समानता दिखाई देती है। वहीं गैर-शारीरिक शिक्षा और शारीरिक शिक्षा की छात्राओं की मनो-सामाजिक विशेषता में सामाजिक दक्षता के आयाम-व्यक्तिगत पर्याप्तता, पारस्परिक पर्याप्तता, सम्प्रेषण कौशल और सम्पूर्ण योग के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया।

Manuscript Info.

- ✓ **ISSN No:** 2584- 184X
- ✓ **Received:** 29-05-2025
- ✓ **Accepted:** 23-06-2025
- ✓ **Published:** 29-06-2025
- ✓ **MRR:3(6):**2025;100-104
- ✓ **©2025, All Rights Reserved.**
- ✓ **Peer Review Process:** Yes
- ✓ **Plagiarism Checked:** Yes

How To Cite this Article

जयनारायण, शिल्पा चक्रवर्ती. शारीरिक शिक्षा और गैर-शारीरिक शिक्षा के विद्यार्थियों की मनो-सामाजिक विशेषता में सामाजिक दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन. Ind J Mod Res Rev. 2025;3(6):100-104.

मुख्य शब्दावली: मनो-सामाजिक विशेषताएं, सामाजिक दक्षता, व्यक्तिगत पर्याप्तता, पारस्परिक पर्याप्तता, सम्प्रेषण कौशल

© 2025 Dr. Ravi Kumar, Vaishali Gupta. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. प्रस्तावना

मनो-सामाजिक मानव अनुभव के मनोवैज्ञानिक और सामाजिक तत्वों के बीच अंतर्संबंधों से संबंधित है। यह बताता है कि कैसे व्यक्तियों की अनुभूति, प्रभाव और व्यवहार उस समाज या संस्कृति से प्रभावित होते हैं। जिसमें उनका पालन-पोषण हुआ है। स्कूल और कक्षाएँ ऐसे स्थान हैं जहाँ उच्च स्तर की मनो-सामाजिक गतिविधि होती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि युवा व्यक्ति, शिक्षकों और साथियों के साथ बातचीत के माध्यम से अपने विचारों और भावनाओं को संप्रेषित करने का कौशल हासिल करते हैं। इन व्यक्तिगत और समूहिक मनो-सामाजिक अनुभवों के महत्व को कम करके नहीं आंका जाना चाहिए। व्यक्तियों के सामाजिक संपर्क विभिन्न तरीकों से विकसित होते हैं; इसलिए, प्रत्येक व्यक्ति के लिए विशिष्ट सामाजिक कौशल और योग्यताएँ होना आवश्यक है। इन कौशलों और योग्यताओं का महत्व वैज्ञानिक साहित्य में स्पष्ट है, जो व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन दोनों में उनकी बढ़ती प्रासंगिकता की प्रवृत्ति को स्पष्ट रूप से उजागर करता है (Jennings & Greenberg, 2009; Reitz, 2012) इसे आमतौर पर ष्सामाजिक योग्यताष् के रूप में व्यक्त किया जाता है, एक ऐसी अवधारणा जिस पर विद्वानों के शोध में तेजी से ध्यान दिया जा रहा है। उच्च शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन और समाज की भावी उन्नति, दोनों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। यह स्पष्ट है कि शिक्षा के ढांचे के भीतर अनेक सामाजिक अंतःक्रियाएँ घटित होती हैं। परिणामस्वरूप, उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सामाजिक योग्यता की अभिव्यक्ति का परीक्षण करना आवश्यक है। इस लेख का केंद्र बिंदु उच्च शिक्षा के संदर्भ में सामाजिक योग्यता पर है। सबसे पहले, सामाजिक योग्यता की एक स्पष्ट परिभाषा स्थापित करना आवश्यक है। कई लेखकों (Arghode, 2013) (Lang, 2010; Stump et al., 2009) का मानना है कि सामाजिक दक्षता की एक सार्वभौमिक परिभाषा अभी भी अस्पष्ट है। एक संभावित व्याख्या यह है कि सामाजिक दक्षता सामाजिक विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में जांच का केंद्र बिंदु है। जैसा कि एन. सी. लैंग (Lang, 2010) बताते हैं, ''बुनियादी सामाजिक विज्ञानों में रुचि के क्षेत्रों में मनोविज्ञान, सामाजिक मनोविज्ञान, बाल विकास, संचार, समाजभाषाविज्ञान, और अनुप्रयुक्त सामाजिक विज्ञानों में, समाज कार्य, शिक्षा, मनोरोग विज्ञान, वाक् विकृति विज्ञान, नैदानिक मनोविज्ञान, पराचिकित्सा और प्रबंधन शामिल हैं।'' फिर भी, एस. रीट्ज़ (Reitz, 2012) का तर्क है कि इस परिभाषा में कुछ समानताएँ देखी जा सकती हैं। उनके सुझाव संकेत देते हैं कि सामाजिक दक्षता किसी व्यक्ति के ज्ञान और कौशल की समग्रता को समाहित करती है, जो अंततः उनके सामाजिक रूप से सक्षम व्यवहार की गुणवत्ता को आकार देती है। एस. रीट्ज़ (Reitz, 2012) सामाजिक दक्षता और सामाजिक रूप से सक्षम व्यवहार के बीच अंतर करने की आवश्यकता पर बल देते हैं, यह देखते हुए कि ''एक व्यक्ति सक्षम हो सकता है, भले ही किसी निश्चित स्थिति में उसका व्यवहार वांछित परिणाम न दिखाए।'' यह स्पष्ट है कि उन्नत सामाजिक कौशल वाला व्यक्ति सामाजिक रूप से कुशल व्यवहार करने की अधिक संभावना रखता है। निष्कर्ष के तौर पर, एस. रीट्ज़ (2012) किसी व्यक्ति के व्यवहार के रूप में सामाजिक रूप से सक्षम व्यवहार को परिभाषित करते हैं जो किसी विशिष्ट स्थिति में व्यक्ति के लक्ष्यों की प्राप्ति की ओर ले जाता है और साथ ही व्यवहार की सामाजिक स्वीकृति की गारंटी देता है।''एन. सी. लैंग (2010) कहते हैं कि सामाजिक दक्षता के कुछ महत्वपूर्ण घटक स्थापित किए जा सकते हैं। वे हैंः स्वयं के बारे में एक भावना और अपनी क्षमताओं का कुछ ज्ञान; दूसरों के बारे में एक भावना और उनकी क्षमताओं की कुछ पहचान; आत्म-प्रबंधन और आंतरिक नियंत्रण का एक माप; आत्म-निर्देशन की एक डिग्री; दूसरों के साथ संबंध बनाने की क्षमता, दूसरों के साथ सामाजिक संपर्क में समकालिकता और उपयुक्तता प्राप्त करने की क्षमता; बातचीत के मानदंडों के बारे में जागरूकता और संकेतों और पैटर्न की कुछ पहचान बातचीत में; दूसरों के साथ सहानुभूतिपूर्वक, संवेदनशीलता से जुड़ने की क्षमता; एक सामूहिक उद्यम में भागीदार और योगदानकर्ता के रूप में दूसरों के साथ जुड़ने की क्षमता। संक्षेप में, यह कहा जाना चाहिए कि एक अवधारणा के रूप में सामाजिक दक्षता की कई परिभाषाएँ हैं या कोई सर्वमान्य परिभाषा नहीं है। ये अंतर आमतौर पर सामाजिक दक्षता की परिघटना के प्रति अलग-अलग दृष्टिकोण, यानी सामाजिक विज्ञान के विभिन्न दृष्टिकोणों या शाखाओं के कारण होते हैं। हालाँकि सामाजिक दक्षता को परिभाषित करने वाली कुछ सामान्य विशेषताओं को स्थापित करना संभव है, फिर भी शोध के विषय के आधार पर विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट परिभाषा की तलाश करनी होगी। छात्रों पर अनेक प्रकार के अधिक/कम सामाजिक दायित्व होते हैं। सोशल मीडिया द्वारा बाधाएं उत्पन्न की जाती हैं, आरामदायक प्राथमिक विद्यालय के माहौल को छोड़ना, नए सहायक रिश्ते बनाना और समूहों में काम करना समाज के बीच मजबूत स्तर की सामाजिक दक्षता की आवश्यकता को बढ़ाता है। (एल्डुन्सिन एट अल., 2014) सामाजिक क्षमता मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य के लिए एक सुरक्षात्मक कारक है। यह हमें मजबूत सामाजिक नेटवर्क बनाने और दूसरों के साथ अच्छा सहयोग करने में सहायता करता है। जो व्यक्ति सामाजिक क्षमता के साथ संघर्ष करते हैं, उन्हें लंबे समय तक चलने वाले, सहायक रिश्ते बनाने में कठिनाई होने की अधिक संभावना होती है और वयस्कों के रूप में उनका मानसिक स्वास्थ्य और खुशहाली भी खराब हो सकती है। वैकल्पिक रूप से, अधिक सामाजिक दक्षता वाले लोग करियर में अधिक सफलता का आनंद लेते हैं (एल्डुन्सिन एट अल., 2014)। 16 वर्ष से अधिक आयु के हाई स्कूल और कॉलेज के छात्रों के लिए सामाजिक दक्षता परीक्षण विकसित किया गया है ताकि उनकी सामाजिक दक्षता को इसके तीन पहलुओं के आधार पर परखा जा सके, अर्थात् निम्नलिखितः

1. व्यक्तिगत पर्याप्तता.
2. पारस्परिक पर्याप्तता
3. सम्प्रेषण दक्षताएं

इस शोध के माध्यम से यह स्पष्ट किया जाना है कि प्रशिक्षण एक भरण पोषण आजीविका नहीं है, बल्कि समाज के प्रति दायित्वों से भरी वृत्ति है। समाज के मार्गदर्शन की जिम्मेदारी प्रशिक्षकों की है, अतः उनके सन्दर्भ में कोई भी घोषणा महत्त्वहीन हो ही नहीं सकती क्योंकि इसका सम्बन्ध शिक्षा एवं शिक्षकों से है। किसी भी राष्ट्र की खेलकूद की प्रशिक्षण की शिक्षा व्यवस्था व शिक्षा की गुणवत्ता प्रशिक्षकों के स्तर से उपर नहीं उठ सकती है। इस प्रस्तुत शोध के महत्व को समझते हुए निम्नलिखित बिन्दुओं से महत्व देखा गया हैः- प्रस्तुत शोध महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के मनो-सामाजिक घटकों सामाजिक दक्षता के अध्ययन से अपने महाविद्यालयों की शिक्षा को सकारात्मक एवं सार्थक बनाया जा सके।

समस्या कथनः 'शारीरिक शिक्षा और गैर-शारीरिक शिक्षा के विद्यार्थियों की मनो-सामाजिक विशेषता में सामाजिक दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन' को समस्या कथन बनाया था।

© 2025 Dr. Ravi Kumar, Vaishali Gupta. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

2. उद्देश्य

1. शारीरिक शिक्षा और गैर-शारीरिक शिक्षा छात्रों की मनो-सामाजिक विशेषताःसामाजिक दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शारीरिक शिक्षा और गैर-शारीरिक शिक्षा छात्राओं की मनो-सामाजिक विशेषताःसामाजिक दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं

1. शारीरिक शिक्षा और गैर-शारीरिक शिक्षा के छात्रों की मनो-सामाजिक विशेषताःसामाजिक दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. शारीरिक शिक्षा और गैर-शारीरिक शिक्षा की छात्राओं की मनो-सामाजिक विशेषताः सामाजिक दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध का परिसीमन

1. प्रस्तुत शोध का भौगोलिक सीमाकन राजस्थान राज्य के बीकानेर संभाग के चार जिलों: बीकानेर, हनुमानगढ़, चूरू और श्रीगंगानगर के स्ववित्तपोषित एवं सरकारी शारीरिक शिक्षा एवं शैक्षणिक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों को शामिल किया गया है।
2. प्रस्तुत शोध में स्ववित्तपोषित एवं सरकारी शारीरिक शिक्षा एवं शैक्षणिक महाविद्यालयों में से केवल 14 महाविद्यालयों के 400 विद्यार्थियों (महिला$पुरूष) को यादृचिछक विधि से शामिल करने का प्रयास किया है।

3. शोधविधि एवं प्रक्रियाएं

समष्टि एवं न्यादर्शः प्रस्तुत शोध में राजस्थान राज्य के बीकानेर संभाग के चार जिलों: बीकानेर, हनुमानगढ़, चूरू और श्रीगंगानगर के स्ववित्तपोषित एवं सरकारी शारीरिक शिक्षा एवं शैक्षणिक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों को समष्टि में शामिल किया गया। प्रस्तुत शोध में समष्टि के सभी विद्यार्थियों को शामिल करना मुश्किल एंव श्रम साध्य होने के कारण न्यादर्श में 14 महाविद्यालयों के 400 विद्यार्थियों को शामिल किया गया।

शोध उपकरण एवं प्रशासन

(अ) सामाजिक दक्षता मापनी: लतिका शर्मा एवं पुनिता रानी निर्मित
इस मापनी मापनी की कोई समय-सीमा नहीं है, लेकिन यह अपेक्षित है कि एक व्यक्ति को इसे पूरा करने में औसतन 45 मिनट लगेंगे। यह मापनी उपभोग्य है। सामाजिक दक्षता मापनी की विश्वसनीयता की गणना परीक्षण-पुनःपरीक्षण विधि सहसंबंध गुणांक $0.843 पाया गया, जो सार्थक स्तर .01 पर सार्थक है। अर्ध-विच्छेदन विधि से त = 0.76 प्राप्त हुआ, जो भी सार्थकता .01 स्तर पर है। मापनी निर्माण प्रक्रिया में, सामाजिक दक्षता मापनी के अंतिम प्रारूप में प्रत्येक कथन के कथन परीक्षण सहसंबंध के माध्यम से विषयवस्तु वैधता की गणना की गई। सामाजिक दक्षता मापनी के प्रत्येक कथन को सामाजिक दक्षता मापनी के कुल अंकों और प्रत्येक उप-मापनी के अंकों के साथ सहसंबंध ज्ञात किया गया। पुस्तिका में किसी-किसी कथन का चिह्न (ऋणात्मक कथन) अंक देने की सुविधा के लिए दर्शाया गया है।
बीकानेर संभाग के चार जिलों में स्थित महाविद्यालयों के संस्था प्रधानों (प्राचार्य/प्रधानाचार्या) से शोधार्थी द्वारा व्यक्तिगत रूप से सम्पर्क किया गया। उन्हें शोधकार्य के उद्देश्य से अवगत कराया और उपकरणों के प्रशासन की अनुमति प्राप्त की गई। तत्पश्चात् निर्देशित कक्षा में जाकर उपकरणों में दिये गये निर्देशों की अक्षरशः पालना करते हुए आयामी सामाजिक दक्षता मापनी का प्रशासन किया गया।
प्रयुक्त सांख्यिकी में प्राप्तांको का विश्लेषण करने हेतु "(Mean), प्रमाणिक विचलन (SD) तथा क्रांतिक अनुपात (CR-Value) की गणना की गई।"

4. शोध परिकल्पना का परीक्षण

तालिका संख्या 1.1: शारीरिक शिक्षा और गैर-शारीरिक शिक्षा छात्रों की मनो-सामाजिक विशेषता में सामाजिक दक्षता के विभिन्न आयाम के मध्यमान, प्रमाप विचलन, मानक त्रुटि और अन्तर की सार्थकता की गणना

सामाजिक दक्षता का आयाम	समूह	N	माध्य (Mean)	प्रमाप विचलन (SD)	मानक त्रुटि (SE)	't' मान	सार्थकता स्तर (0.05)
व्यक्तिगत पर्याप्तता	गैर-शारीरिक शिक्षा छात्र	100	48.580	5.5853	.5585	0.562	.575
	शारीरिक शिक्षा छात्र	100	49.020	5.4864	.5486		
पारस्परिक पर्याप्तता	गैर-शारीरिक शिक्षा छात्र	100	48.940	5.4750	.5475	0.025	.980
	शारीरिक शिक्षा छात्र	100	48.960	5.6478	.5648		
सम्प्रेषण कौशल	गैर-शारीरिक शिक्षा छात्र	100	36.770	5.4474	.5447	1.335	.183
	शारीरिक शिक्षा छात्र	100	37.720	4.5772	.4577		
सम्पूर्ण योग	गैर-शारीरिक शिक्षा छात्र	100	134.29	12.6781	1.2678	0.777	.438
	शारीरिक शिक्षा छात्र	100	135.70	12.9728	1.2973		

उपरोक्त तालिका संख्या 1.1 में शारीरिक शिक्षा और गैर-शारीरिक शिक्षा छात्रों की मनो-सामाजिक विशेषताःसामाजिक दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, के परीक्षण करने टी-मान की गणना हेतु इसके सभी आयामों का परीक्षण किया जिसमें गैर-शारीरिक शिक्षा और शारीरिक शिक्षा छात्रों की मनो-सामाजिक विशेषता में सामाजिक दक्षता के आयाम-व्यक्तिगत पर्याप्तता के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता की गणना में टी-मान = 0.562 असार्थक पाया। उक्त परिकल्पना अस्वीकृत नहीं हुई। गैर-शारीरिक शिक्षा और शारीरिक शिक्षा छात्रों की मनो-सामाजिक विशेषता में सामाजिक दक्षता के आयाम-पारस्परिक पर्याप्तता के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता की गणना में टी-मान = 0.025 असार्थक पाया। उक्त परिकल्पना अस्वीकृत नहीं हुई। गैर-शारीरिक शिक्षा और शारीरिक शिक्षा छात्रों की मनो-सामाजिक विशेषता में सामाजिक दक्षता के आयाम-सम्प्रेषण कौशल के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता की गणना में टी-मान = 1.335 असार्थक पाया। उक्त परिकल्पना अस्वीकृत नहीं हुई। गैर-शारीरिक शिक्षा और शारीरिक शिक्षा छात्रों की मनो-सामाजिक विशेषता में सामाजिक दक्षता के सम्पूर्ण

© 2025 Dr. Ravi Kumar, Vaishali Gupta. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

योग के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता की गणना में टी-मान = 0.777 असार्थक पाया। उक्त परिकल्पना अस्वीकृत नहीं हुई। समग्र रूप में शारीरिक शिक्षा और गैर-शारीरिक शिक्षा छात्रों की मनो-सामाजिक विशेषताःसामाजिक दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 1.2 : शारीरिक शिक्षा और गैर-शारीरिक शिक्षा की छात्राओं की मनो-सामाजिक विशेषता में सामाजिक दक्षता के विभिन्न आयामों के मध्यमान, प्रमाप विचलन, मानक त्रुटि और अन्तर की सार्थकता की गणना

सामाजिक दक्षता का आयाम	आँकड़ों का समूह	N	माध्य (Mean)	प्रमाप विचलन (SD)	मानक त्रुटि (SE)	't' मान	सार्थकता स्तर (0.05)
व्यक्तिगत पर्याप्तता	गैर-शारीरिक शिक्षा छात्राएँ	100	48.520	6.316	0.631	3.090	0.002
	शारीरिक शिक्षा छात्राएँ	100	51.480	7.202	0.720		
पारस्परिक पर्याप्तता	गैर-शारीरिक शिक्षा छात्राएँ	100	48.530	6.556	0.656	1.937	0.054
	शारीरिक शिक्षा छात्राएँ	100	50.400	7.085	0.709		
सम्प्रेषण कौशल	गैर-शारीरिक शिक्षा छात्राएँ	100	38.540	5.506	0.551	6.952	0.000
	शारीरिक शिक्षा छात्राएँ	100	45.160	7.769	0.777		
सम्पूर्ण योग	गैर-शारीरिक शिक्षा छात्राएँ	100	135.59	14.541	1.454	5.018	0.000
	शारीरिक शिक्षा छात्राएँ	100	147.04	17.583	1.758		

उपरोक्त तालिका संख्या 1.2 में शारीरिक शिक्षा और गैर-शारीरिक शिक्षा की छात्राओं की मनो-सामाजिक विशेषताःसामाजिक दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, के परीक्षण करने टी-मान की गणना हेतु इसके सभी आयामों का परीक्षण किया जिसमें गैर-शारीरिक शिक्षा और शारीरिक शिक्षा छात्राओं की मनो-सामाजिक विशेषता में सामाजिक दक्षता के आयाम-व्यक्तिगत पर्याप्तता के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता की गणना में टी-मान = 3.090 सार्थक पाया गया। उक्त परिकल्पना अस्वीकृत हुई। गैर-शारीरिक शिक्षा और शारीरिक शिक्षा छात्राओं की मनो-सामाजिक विशेषता में सामाजिक दक्षता के आयाम-पारस्परिक पर्याप्तता के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता की गणना में टी-मान = 1.937 असार्थक पाया गया। उक्त परिकल्पना अस्वीकृत नहीं हुई। गैर-शारीरिक शिक्षा और शारीरिक शिक्षा छात्राओं की मनो-सामाजिक विशेषता में सामाजिक दक्षता के आयाम- सम्प्रेषण कौशल के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता की गणना में टी-मान = 6.952 सार्थक पाया गया। उक्त परिकल्पना अस्वीकृत हुई। गैर-शारीरिक शिक्षा और शारीरिक शिक्षा छात्राओं की मनो-सामाजिक विशेषता में सामाजिक दक्षता के सम्पूर्ण योग के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता की गणना में टी-मान = 5.018 सार्थक पाया गया। उक्त परिकल्पना अस्वीकृत हुई। समग्र रूप में शारीरिक शिक्षा और गैर-शारीरिक शिक्षा छात्राओं की मनो-सामाजिक विशेषताः सामाजिक दक्षता में सार्थक अन्तर पाया गया।

5. शोध निष्कर्ष

1. गैर-शारीरिक शिक्षा और शारीरिक शिक्षा छात्रों की मनो-सामाजिक विशेषता में सामाजिक दक्षता के आयाम-व्यक्तिगत पर्याप्तता, पारस्परिक पर्याप्तता, सम्प्रेषण कौशल और सम्पूर्ण योग के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। निष्कर्ष में कह सकते हैं कि दोनों समूहों (गैर-शारीरिक शिक्षा और शारीरिक शिक्षा छात्रों) की सामाजिक दक्षता में समानता दिखाई देती है।
2. गैर-शारीरिक शिक्षा और शारीरिक शिक्षा की छात्राओं की मनो-सामाजिक विशेषता में सामाजिक दक्षता के आयाम-व्यक्तिगत पर्याप्तता, पारस्परिक पर्याप्तता, सम्प्रेषण कौशल और सम्पूर्ण योग के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया। निष्कर्ष में यह कह सकते हैं कि दोनों समूहों (गैर-शारीरिक शिक्षा और शारीरिक शिक्षा छात्रों) की सामाजिक दक्षता में अन्तर दिखाई देता है।

शैक्षिक निहितार्थ: सामाजिक दक्षता, जिसमें पारस्परिक कौशल, संचार और संघर्ष समाधान शामिल हैं, भविष्य की रोजगारपरकता और नेतृत्वकारी भूमिकाओं के लिए महत्वपूर्ण है। शिक्षकों के पास विभिन्न विषयों में, चाहे वे भौतिक हों या गैर-भौतिक, सहयोगी परियोजनाओं, सहकर्मी मार्गदर्शन और सहकारी शिक्षण मॉडलों को एकीकृत करने का अवसर होता है। सहानुभूति, सहनशीलता और समस्या-समाधान कौशल विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करना महत्वपूर्ण है, क्योंकि इन क्षमताओं को वास्तविक दुनिया की स्थितियों में लागू किया जा सकता है। गैर शारीरिक शिक्षा के विद्यार्थियों में सामाजिक दक्षता में अधिक सुदृढ़ता पाई गई। शारीरिक शिक्षा के विद्यार्थियों में सामाजिक दक्षता में वृद्धि की अधिक संभावना है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

1. Arghode V. Emotional and social intelligence competence: Implications for instruction. *Int J Pedagog Learn*. 2013;8(2):66–77.
2. Alduncin N, Huffman LC, Feldman HM, Loe IM. Executive function is associated with social competence in preschool-aged children born preterm or full term. *Early Hum Dev*. 2014;90(6):299–306.
3. Jennings PA, Greenberg MT. The prosocial classroom: Teacher social and emotional competence in relation to student and classroom outcomes. *Rev Educ Res*. 2009;79(1):491–525.
4. Lang NC. *Group work practice to advance social competence: A specialized methodology for social work*. New York: Columbia University Press; 2010.

© 2025 Dr. Ravi Kumar, Vaishali Gupta. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

5. Reitz S. *Improving social competence via e-learning?: The example of human rights education*. Frankfurt: Peter Lang GmbH, Internationaler Verlag der Wissenschaften; 2012.
6. Stump KN, Ratliff JM, Wu YP, Hawley PH. Theories of social competence from the top-down to the bottom-up: A case for considering foundational human needs. In: *Social behavior and skills in children*. New York: Springer; 2009. p. 23–37.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

© 2025 Dr. Ravi Kumar, Vaishali Gupta. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/